Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

जातिवाद एवं ग्रामीण राजनीति

डॉ. राजेश त्रिपाठी[1] - निर्मला देवी[2]

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अन्य प्राणियों की भाँति आरम्भ से ही समूह में रहने की प्रवृत्ति उसमें भी पायी जाती है। बालक अपने माता–पिता के साथ अपने को पूर्ण सुरक्षित समझता है और यही सुरक्षा की भावना मनुष्य को समूह निर्माण की प्रेरणा देती है। व्यक्ति की अनेक मानसिक तथा शारीरिक आवश्यकतायें होती है, जिसकी पूर्ति वह समाज में रहकर ही कर सकता है। व्यक्ति का जीवन में जो लक्ष्य होता है उसकी पूर्ति भी समाज में रहकर ही सम्भव है। पृथक एकाकी जीवन की कल्पना भी व्यक्ति के लिए असहाय है। व्यक्ति ही समाज को बनाते हैं। अतः परिवार में व्यक्तित्व को बनाना परोक्ष रूप से समाज का ही निर्माण है।

प्राचीन ग्रामीण समाज एक ऐसे समाज के अन्तर्गत आता है, जहाँ पर समस्त सामाजिक कार्यों पर परम्पराओं एवं रूढ़ियों का नियन्त्रण होता था। ग्रामीण समाज के अन्तर्गत पारिवारिक विवाह, एक प्रमुख सामाजिक संस्थाओं के रूप में कार्य करती थी, जो कि समस्त सामाजिक जीवन पर अपना नियंत्रण स्थापित करने का कार्य करती थी।

जातिगत पेशा गाँवों में शुरू से ही प्रचलित था। ग्रामीण जातियाँ मुख्यतः चार भाँगों में बांटी गयी है–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण कर्मकाण्ड और शिक्षा से जुड़े थे, क्षत्रिय समाज की रक्षा का कार्य करते थे, वैश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था से और शूद्र सेवा का कार्य करते थे। इनमें समय–समय पर काफी विकृतियाँ आ गई है। इस व्यवस्था में धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगा और जातिगत पेशा का स्वरूप बदलने लगा और उसका सीधा प्रभाव ग्रामीण सुव्यवस्था पर पड़ा। यह व्यवस्था धीरे–धीरे चरमराने लगी और आपसी सद्भाव में कमी आने लगी। जनसंख्या का दबाव बढ़ा, कृषि योग्य भूमि का प्रति व्यक्ति अनुपात घटने लगा। लोगों का पेट भरना मुश्किल हो गया, अनाज की पैदावार उतनी नहीं बढ़ गयी, जितनी बढ़नी चाहिए। रोजगार के अवसर भी कम हो गये।

ग्रामीणों के विकास में राजनीति अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। राजनीति ग्रामीणों को जागरुक एवं सहभागी बनाती है तथा विकास के मार्ग पर गतिशील रहती है और भेद–भाव से मुक्त रहती है। लेकिन आधुनिक समय में जातिवाद ने राजनीति की काया पलट दी जिसके परिणाम स्वरूप ग्रामीण राजनीति अत्यधिक रूप से प्रभावित हुयी। जिसमें जातिगत भावना

[1] एसो0प्रोफे0, समाजशास्त्र, ग्रामीण प्रबन्ध विभाग, म0गाँ0चि0ग्रा0वि0वि0,चित्रकूट सतना (म.प्र.)
[2] शोध छात्रा, समाजशास्त्र, म0गाँ0चि0ग्रा0वि0वि0,चित्रकूट सतना (म.प्र.)

का उदय हुआ जाति के आधार पर चुनाव लड़ने व नेतृत्व करना तथा हर जाति का अपना नेता होता है। प्रत्याशी के चरित्र पर ध्यान न देकर अपनी विरादरी पर ध्यान देना अपनी जाति के सदस्य के जीतने के बाद अन्य जातियों पर दब–दबा बनाना। राजनीति में पद पाये हुये लोग कतिपय अपने ही वर्ग के लोगों पर ही विशेष ध्यान देते हैं। उनकी यह राजनीति करने की नीति होती है और अपनी जाति विशेष का विकास अधिक चाहते हैं। ये समस्यायें जातिवाद के कारण राजनीति में आ चुकी हैं। जातिवाद एक गम्भीर समस्या है, जिसको हल करके ही एक संगठित समाज की स्थापना की जा सकती है। इसके लिए ग्रामीण समाज में जातिवाद के कारणों को जानना अत्यन्त आवश्यक है तथा इन समस्याओं का निदान करके ग्रामीण विकास सम्भव है और राजनीति दोष मुक्त भी तभी हो सकती है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध में बाँदा जिले के नरैनी तहसील के महुआ विकासखण्ड में स्थिति अर्जुनाह ग्राम पंचायत का चयन किया है। इस ग्राम में सामान्य, पिछड़ी जाति, अनुसूचित जातियाँ निवास करती हैं। इस ग्राम में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं परिस्थितियों के लोग निवास करते हैं।

उद्देश्य

1. जातिवाद एवं ग्रामीण राजनीति से प्रभावित उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन करना।
2. ग्राम पंचायत में जातिवाद के व्यवाहारिक स्वरूप का अध्ययन करना।
3. जातिवाद ग्रामीण को राजनीति में प्रभाव का आंकलन करना।
4. ग्राम पंचायत में जातिवाद एवं इसके द्वारा प्रभावित होने वाले कारणों का पता लगाना।
5. जातिवाद से सामाजिक व्यवस्था को मुक्त रखने के लिए उत्तरदाता के सुझाव को जानना।

अध्ययन पद्धति

शोध कार्य हेतु चयनित ग्राम पंचायत में कुल 640 परिवार थे, जिसमें से अध्ययन हेतु समस्त परिवारों में से 50 परिवारों का चयन सोउद्देश्य निदर्शन पद्धति से विभिन्न जाति एवं सामाजिक तथा आर्थिक स्तर से किया गया।

सारणी क्रमांक–1
उम्र के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	उम्र	संख्या	प्रतिशत
1..	18–28	05	10
2.	28–38	12	24

3.	38–48	20	40
4.	48 से ऊपर	13	26
	कुल योग	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि जातिवाद एवं राजनीति में सर्वाधिक भागेदारी 38 से 48 वर्ष के लोगों की पायी गयी।

सारणी क्रमांक–2

शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	**शिक्षा**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1..	प्राइमरी	07	14
2.	माध्यमिक	14	28
3.	उच्च	09	18
4.	निरक्षर	20	40
	कुल योग	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गाँव में निवास करने वालों की सर्वाधिक प्रतिशत निरक्षर है, और यही लोग जातिवाद एवं राजनीति में अधिक भागीदारी करते पाये गये।

सारणी क्रमांक–3

व्यवसाय के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	**व्यवसाय**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1..	मजदूरी	15	30
2.	कृषि	15	30
3.	व्यापार	06	12
4.	नौकरी	10	20
5.	कोई व्यवसाय नहीं	04	08
	कुल योग	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि मजदूर एवं कृषक वर्ग के लोगों की हिस्सेदारी राजनीति एवं जातिवाद में बराबर की पायी गयी।

सारणी क्रमांक–4

जातिवाद को लेकर लोगों में संघर्ष के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	**विकल्प**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1..	हाँ	08	16
2.	नहीं	18	36
3.	कभी–कभी	24	48
	कुल योग	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि जातिवाद को लेकर कभी–कभी संघर्ष होते हैं, जिससे गाँव की राजनीति प्रभावित होती है।

सारणी क्रमांक–5

जातिवाद को लेकर ग्रामीणों की सामाजिक व्यवस्था प्रभावित होने के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1..	हाँ	39	78
2.	नहीं	11	22
	कुल योग	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गाँव में जातिवाद सामाजिक व्यवस्था को सर्वाधिक प्रभावित करते पाया गया, जिससे सामाजिक व्यवस्था में बदलाव आ रहा है।

सारणी क्रमांक–6

जातिवाद से ग्राम पंचायत के चुनाव प्रभावित होने के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1..	हाँ	50	100
2.	नहीं	00	00
	कुल योग	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि जातिवाद के प्रभाव के कारण गाँव में ग्राम पंचायत चुनाव पूर्ण रूप से प्रभावित हो रहे हैं। ऐसा गाँव के शत्–प्रतिशत (सभी) उत्तरदाताओं का मानना है।

सारणी क्रमांक–7

जातिवाद को गाँव में पूरी तरह समाप्त करने हेतु सुझाव के आधार पर वर्गीकरण

क्र.सं.	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1..	जागरुकता	06	12
2.	शिक्षा का प्रसार	26	52
3.	भाई चारा	11	22
4.	सांस्कृतिक एवं व्यवहारिक कार्यक्रम कराना	07	14
	कुल योग	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि गाँव में जातिवाद को पूर्णतः समाप्त करने के लिए शिक्षा के प्रसार का सुझाव सर्वाधिक रूप से स्वीकार किया गया, जिससे गाँव में जातिवाद को समाप्त करने हेतु प्रयास किया जा सकता है और इससे स्वच्छ राजनीति स्थापित हो सकेंगी।

निष्कर्ष

1. गाँव में सभी जाति के लोग लगभग समान रूप से जातिवाद एवं राजनीति में भाग लेते हैं।
2. गाँव में जातिवाद एवं राजनीति को बढ़ावा देने वाले 38 से 48 वर्ष के उत्तरदाता अधिक पाये गये हैं।

3. जातिवाद को बढ़ाने एवं राजनीति को प्रभावित करने वाले अधिकांश उत्तरदाता निरक्षर पाये गये।
4. अधिकांश एकाकी परिवार जातिवाद एवं राजनीति को प्रभावित करते पाये गये।
5. कच्चे घरों में निवास करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या 60 प्रतिशत है। इन घरों में रहने वाले लोग राजनीति एवं जातिवाद को अधिक प्रभावित करते पाये गये।
6. कृषि कार्य एवं मजदूरी व्यवसाय में लिप्त लोग जातिवाद को अधिक प्रभावित करते हैं एवं ग्रामीण राजनीति में भागीदारी करते पाये गये।
7. कभी–कभी जातिवाद को लेकर आपसी संघर्ष होते पाये गये हैं, जिससे ग्रामीण राजनीति होती पायी गयी।
8. जातिवाद से ग्रामीणों की सामाजिक व्यवस्था प्रभावित हुयी है, जातिवाद से गाँव की राजनीति कभी–कभी प्रभावित होती पायी गयी।
9. जातिवाद से ग्राम पंचायत के चुनाव पूर्णतया प्रभावित होते पाये गये।
10. जाति से उभरने के लिए सभी लोग सुझाव देने के इच्छुक पाये गये।
11. जातिवाद से ग्राम पंचायत के प्रभावित होने का मुख्य कारण आपसी ईर्ष्या है, जिसेस जातिवाद बढ़ता है और राजनीति भी प्रभावित होती पायी गयी है।
12. शिक्षा के प्रसार से जातिवाद एवं जातिगत राजनीति को खत्म किया जा सकता है।

सुझाव

1. सभी जाति के लोगों को जातिवाद को खत्म करने के लिए समान रूप से पहल करने की आवश्यकता है।
2. गाँव में प्रौढ़ शिक्षा एवं शिक्षा के कार्यक्रमों को प्रसारित करने की आवश्यकता है।
3. कम आय होने के कारण गाँव रोजगार के नये अवसरों को उपलब्ध कराना तथा कुटीर लघु उद्योग की जानकारी प्रदान करना आवश्यक है।
4. गाँव के लोगों के लिए टी.वी. में ज्ञानवर्धन प्रोग्राम व जनकल्याण विकास कार्यक्रम एवं कृषि नाटक आदि को देखना।
5. कृषकों एवं मजदूरों को जागरुक करने के लिए जागरुकता रैली कार्यक्रम करना।

6. सरकार को जातिवाद के खिलाफ कार्यक्रमों को करवाना चाहिए तथा राजनीति को जाति के बल पर प्रभावित करने वाले लोगों पर कड़ी कार्यवाही करना होगा।
7. सभी जातियों को आपसी सम्बन्ध बढ़ाने चाहिए एवं होने वाले जातिगत संघर्ष को रोकना तथा मैत्रीपूर्ण सम्बंध बनाना आवश्यक है।
8. सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए सभी जाति के लोगों को समानता एवं सहयोग की भावना को रखने का प्रयास आवश्यक हैं।
9. गाँव की राजनीति को जातिवाद विचारधारा से दूर रखना आवश्यक है।
10. ग्राम पंचायत में प्रत्याशी का चयन जाति को न देकर उसके व्यक्तित्व पर ध्यान देना आवश्यक है।
11. लोगों का मुख्य सुझाव है कि शिक्षा का प्रसार करना है।
12. सभी लोगों को ऊँच–नींच की भावना का त्याग करना चाहिये और जागरुक होना अत्यन्त आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. मुखर्जी रवीन्द्र नाथ – सामाजिक शोध एवं सांख्यकी, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–07
2. पाण्डेय तेजस्कर पाण्डेय ओजस्कर – समाजकार्य, भारत बुक सेन्टर, लखनऊ
3. शर्मा डॉ. श्रीनाथ – जनजाति समाजशास्त्र, प्रकाशक म.प्र. रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग वानगंगा भोपाल
4. पाण्डेय संगीता तेज – समाजकार्य
5. गुप्ता घनश्याम – म.प्र. का संदेश, जनजाति

पत्रिका: कुरुक्षेत्र, जनजाति का विकास, 2005
समाचार–पत्र: दैनिक भास्कर, 28 अप्रैल, 2012